IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विद्यालय वातावरण, उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं समायोजन पर विद्यालय प्रकार का प्रभाव: एक तुलनात्मक मनो-शैक्षिक विश्लेषण

डॉ. पूराराम मेघवाल

सहायक आचार्य, आई.ए.एस.ई. (मानित विश्वविद्यालय), गाँधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, चुरू, राजस्थान।

राजवीर सिंह यादव

शोधार्थी, आई.ए.एस.ई. (मानित विश्वविद्यालय), गाँधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, चुरू, राजस्थान।

सारांश-

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य राजस्थान राज्य के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण, उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा समायोजन व्यवहार का विद्यालय के प्रकार (सरकारी एवं गैर-सरकारी) के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण करना था। शोध में कुल 800 विद्यार्थियों (400 सरकारी एवं 400 गैर-सरकारी विद्यालयों से; प्रत्येक में 200 छात्र एवं 200 छात्राएँ) को स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया। अध्ययन में विद्यालय वातावरण मापन प्रश्नावली, उपलब्धि अभिप्रेरणा स्केल, तथा समायोजन मापन प्रश्नावली जैसे मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग कर आंकड़ों का संकलन किया गया तथा विश्लेषण हेतु स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण (Independent Samples t-test) का उपयोग किया गया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि विद्यालय का प्रकार विद्यार्थियों के अनुभवों, प्रेरणा तथा समायोजन व्यवहार पर सार्थक प्रभाव डालता है। सरकारी विद्यालयों के छात्र जहाँ रचनात्मकता, सामाजिक संवाद एवं सहयोगात्मक संस्कृति में श्रेष्ठ पाए गए, वहीं गैर-सरकारी विद्यालयों के छात्रों ने संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, अनुशासन, तथा उपलब्धि उन्मुख मानसिकता में स्पष्ट बढ़त दिखाई। समायोजन के संदर्भ में सरकारी विद्यालयों के छात्र सामाजिक समायोजन, जबकि निजी विद्यालयों के छात्र शैक्षिक एवं भावनात्मक समायोजन में अधिक संतुलित पाए गए। यह अध्ययन इस ओर संकेत करता है कि विद्यालयीय वातावरण विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास का एक महत्त्वपूर्ण निर्धारक है। अतः शिक्षा-नीतियों, शिक्षक-प्रशिक्षण एवं विद्यालय प्रबंधन में ऐसे समन्वित दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों की श्रेष्ठताओं को जोड़कर विद्यार्थियों के समग्र विकास को सुनिश्चित कर सके।

मुख्य शब्द-

विद्यालय वातावरण, उपलब्धि अभिप्रेरणा, समायोजन, सरकारी विद्यालय, निजी विद्यालय, तुलनात्मक अध्ययन।

1. प्रस्तावना-

विद्यालय एक ऐसा बहुआयामी सामाजिक संस्थान है, जहाँ केवल औपचारिक शैक्षणिक ज्ञान का हस्तांतरण नहीं होता, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व, मूल्यों, सामाजिक समझ और जीवन कौशल का भी विकास होता है (NAIS, 2025)। यह संस्था न केवल छात्रों के संज्ञानात्मक पक्ष को विकसित करती है, बल्कि उनकी अभिप्रेरणा, भावनात्मक संतुलन और सामाजिक समायोजन की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विद्यालय का भौतिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक वातावरण, शिक्षकों की कार्यप्रणाली, अनुशासन संबंधी नीतियाँ तथा विद्यार्थी-शिक्षक व विद्यार्थी-विद्यार्थी के आपसी संबंध मिलकर छात्र की शैक्षिक उपलब्धि, आत्मबोध और मानसिक स्वास्थ्य को आकार प्रदान करते हैं (NEP, 2020)।

भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में, जहाँ सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालय समानांतर रूप से शिक्षा प्रणाली का हिस्सा हैं, वहाँ इन दोनों संस्थानों के कार्यप्रणाली, संसाधन-सुलभता, मूल्यधारा, अनुशासनिक शैली और शैक्षिक दृष्टिकोण में अक्सर स्पष्ट भिन्नताएँ देखी जाती हैं। सरकारी विद्यालयों में सामान्यतः संसाधनों की सीमितता और जनसांख्यिकीय विविधता अधिक देखने को मिलती है, जबकि निजी विद्यालय अपेक्षाकृत संरचित, संसाधन-सम्पन्न और अनुशासन प्रधान माने जाते हैं। यद्यपि दोनों प्रकार के विद्यालय अपने-अपने ढंग से शिक्षा के क्षेत्र में योगदान कर रहे हैं, फिर भी यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न बना रहता है कि इनकी कार्यशैली का विद्यार्थियों की आंतरिक प्रेरणा, मनोवैज्ञानिक समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। (Vu, et al., 2022)

यद्यपि विगत वर्षों में भारत में विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता पर अनेक अध्ययन हुए हैं, तथापि सरकारी एवं निजी विद्यालयों के प्रभाव की तुलनात्मक विवेचना अब भी सीमित है, विशेषतः समायोजन, उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं विद्यालय वातावरण जैसे सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक पहलुओं के संदर्भ में। इसी शून्य की पूर्ति हेतु प्रस्तुत अध्ययन को रूपांतरित किया गया, जिसका उद्देश्य सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य जीवन अनुभवों, अभिप्रेरणा संरचना, समायोजन व्यवहार एवं मानसिक ग्रहणशीलता की तुलनात्मक समझ विकसित करना है (Ogundele, 2018)।

यह अध्ययन न केवल शैक्षिक नीति-निर्माताओं और संस्थागत प्रशासकों के लिए उपयोगी साक्ष्य प्रदान करता है, बल्कि यह शिक्षकों और मनोवैज्ञानिकों को भी विद्यार्थियों की भावनात्मक व प्रेरणात्मक ज़रूरतों को समझने और उनकी पूर्ति के लिए उपयुक्त रणनीति विकसित करने की दिशा में मार्गदर्शन करता है।

2. उद्देश्य-

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के छात्रों के मनोवैज्ञानिक और शैक्षणिक आयामों का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। भारत में विद्यालयी शिक्षा के दो समानांतर ढांचे- सरकारी और निजी (गैर-सरकारी) विद्यालय, विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक परिवेशों से प्रभावित होते हैं, जो विद्यार्थियों के अनुभवों, व्यवहारों तथा उपलब्धियों को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। इस शोध के माध्यम से इन दोनों प्रणालियों के प्रभावों को तीन विशिष्ट मनो-शैक्षिक चरों के संदर्भ में जांचा गया है। अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- **विद्यालय वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन:** यह जानना कि सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अनुभव किया गया विद्यालय वातावरण, जैसे कक्षा का परिवेश, अनुशासन नीति, शिक्षक व्यवहार, संवाद की गुणवत्ता, और नैतिक-सांस्कृतिक वातावरण, किस सीमा तक भिन्न है।
- **उपलब्धि अभिप्रेरणा की तुलना:** यह जांचना कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के छात्रों में अपनी शैक्षिक उपलब्धियों के प्रति प्रेरणा, लक्ष्य निर्धारण, प्रतियोगी भावना, आत्म-प्रेरणा और प्रयत्नशीलता जैसे तत्व किस प्रकार भिन्न स्तरों पर विद्यमान हैं।
- **समायोजन व्यवहार का तुलनात्मक विश्लेषण:** यह विश्लेषण करना कि शैक्षिक (Academic), सामाजिक (Social) और भावनात्मक (Emotional) समायोजन की दृष्टि से सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के छात्रों में क्या अंतर पाया जाता है, और उनके समायोजन की गुणवत्ता पर विद्यालय के प्रकार का क्या प्रभाव पड़ता है।

इन उद्देश्यों के माध्यम से अध्ययन का प्रयास विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभव को बहुआयामी दृष्टिकोण से समझने, तथा विद्यालय प्रणालियों के प्रभाव को अधिक गहराई से परखने का है, जिससे नीतिगत सुधार और शिक्षण रणनीतियों को अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

3. शोध पद्धति-

प्रस्तुत अध्ययन एक वर्णनात्मक तुलनात्मक शोध (Descriptive Comparative Research) है, जिसका उद्देश्य सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के बीच विद्यालय वातावरण, उपलब्धि अभिप्रेरणा, और समायोजन व्यवहार की तुलनात्मक विवेचना करना है। यह अध्ययन सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित है, जिसमें पूर्वनिर्धारित मापन उपकरणों के माध्यम से आंकड़ों का संग्रह और विश्लेषण किया गया।

3.1 न्यादर्श-

शोध के लिए चयनित न्यादर्श राजस्थान राज्य के जयपुर संभाग के खनन प्रभावित क्षेत्रों में स्थित आठ उच्च माध्यमिक विद्यालयों से लिया गया। इनमें चार सरकारी एवं चार गैर-सरकारी विद्यालयों को सम्मिलित किया गया, ताकि दोनों प्रकार के संस्थानों का तुलनात्मक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके। अध्ययन में कुल 800 विद्यार्थियों को शामिल किया गया, जिनमें से 400 विद्यार्थी सरकारी विद्यालयों से एवं 400 विद्यार्थी गैर-सरकारी विद्यालयों से थे। दोनों समूहों में लिंग-संतुलन को सुनिश्चित करते हुए 200 छात्र और 200 छात्राएँ शामिल की गईं।

इस प्रकार संपूर्ण न्यादर्श को इस प्रकार संरचित किया गया कि विद्यालय के प्रकार (सरकारी बनाम गैर-सरकारी) एवं लिंग (छात्र बनाम छात्रा) के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण की उपयुक्तता बनी रहे। यह चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि (Stratified Random Sampling) के माध्यम से किया गया, जिसमें विद्यालय का प्रकार और विद्यार्थियों का लिंग दो प्रमुख स्तरीकरण मानक के रूप में अपनाए गए। इस रणनीति ने यह सुनिश्चित किया कि अध्ययन में विविधता और तुलनीयता दोनों विद्यमान रहें, जिससे निष्कर्ष अधिक वैज्ञानिक, विश्वसनीय और प्रतिनिधिक सिद्ध हो सकें।

3.2 प्रकल्प-

प्रस्तुत अध्ययन का स्वरूप तुलनात्मक वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान डिज़ाइन (Comparative Descriptive Survey Research Design) पर आधारित है। इस डिज़ाइन के अंतर्गत शोधकर्ता ने सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अनुभवों, दृष्टिकोणों एवं व्यवहारों की तुलना करने का प्रयास किया है। विशेष रूप से अध्ययन का फोकस तीन प्रमुख मनो-शैक्षिक चरों- विद्यालय वातावरण, उपलब्धि अभिप्रेरणा, और समायोजन व्यवहार, पर केंद्रित रहा।

यह डिज़ाइन इसलिए उपयुक्त माना गया क्योंकि यह विभिन्न सामाजिक एवं शैक्षिक संदर्भों में विद्यार्थियों के अनुभवों के तुलनात्मक विश्लेषण की अनुमति देता है, साथ ही यह स्पष्ट करता है कि विद्यालय की प्रकृति (सरकारी अथवा निजी) विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक स्वरूप को किस प्रकार प्रभावित करती है। इस डिज़ाइन में बिना किसी प्रयोगात्मक हस्तक्षेप के, प्राकृतिक परिवेश में आंकड़ों का संकलन कर उनके सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा निष्कर्ष प्राप्त किये गए।

3.3 उपकरण-

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के संग्रह के लिए तीन प्रमुख मानकीकृत एवं स्वीकृत उपकरणों (Standardized and Validated Tools) का प्रयोग किया गया। इन सभी उपकरणों का उद्देश्य सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अनुभवों, मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों और अनुकूलन व्यवहार का वस्तुनिष्ठ मापन करना था। इन उपकरणों का चयन विद्यार्थियों के आयु स्तर, सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा अध्ययन के उद्देश्यों की उपयुक्तता को ध्यान में रखते हुए किया गया। विद्यालय वातावरण के मापन हेतु डॉ. के.एस. मिश्रा द्वारा विकसित विद्यालय वातावरण मापनी, डॉ प्रतिभा देव एवं डॉ आशा मोहन द्वारा विकसित उपलब्धि अभिप्रेरणा मापनी तथा डॉ. ए.के.पी. सिन्हा एवं डॉ. आर.पी. सिंह द्वारा विकसित समायोजन मापनी का प्रयोग आंकड़ों के संकलन हेतु किया गया।

3.4सांख्यिकीय तकनीक:

प्रस्तुत अध्ययन में एक स्वतंत्र चर (विद्यालय का प्रकार: सरकारी एवं गैर-सरकारी) और तीन आश्रित चर (विद्यालय वातावरण, उपलब्धि अभिप्रेरणा, तथा समायोजन) के बीच तुलनात्मक अंतर को जांचने हेतु उपयुक्त मूल्यांकनात्मक सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शोधकर्ता ने "स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण (Independent Samples t-test)" को प्रमुख सांख्यिकीय तकनीक के रूप में अपनाया।

t-परीक्षण एक व्यापक रूप से प्रयुक्त परामितीय तकनीक है, जिसका उपयोग दो स्वतंत्र समूहों के मध्य किसी विशेष चर पर औसत में अंतर की सांख्यिकीय दृष्टि से जांच हेतु किया जाता है (Bevans, 2020)। इस अध्ययन में यह जांचने का प्रयास किया गया कि क्या सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों के छात्रों द्वारा अनुभव किए गए विद्यालय वातावरण, उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं समायोजन व्यवहार में कोई सार्थक अंतर (statistically significant difference) विद्यमान है या नहीं।

इस परीक्षण की पूर्वधारणाएँ (Assumptions), जैसे कि सामान्य वितरण (Normality), वैरिएंस की समरूपता (Homogeneity of Variance) तथा स्वतंत्र प्रेक्षण (Independence of Observations), की पुष्टि डेटा विश्लेषण से पूर्व की गई। सभी आंकड़ों का विश्लेषण SPSS सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर (Version 30) की सहायता से किया गया, और

t-मूल्य के साथ-साथ माध्य (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation), तथा सांख्यिकीय महत्व (p-value) को भी रिपोर्ट किया गया। विश्लेषण का सार्थकता स्तर 0.05 (5%) रखा गया। यह तकनीक न केवल अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप रही, बल्कि इससे प्राप्त निष्कर्षों की वैधता एवं तुलनात्मकता भी सुनिश्चित हुई।

4 प्रमुख निष्कर्ष-

इस अध्ययन का उद्देश्य सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के छात्रों के विद्यालय वातावरण, उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं समायोजन व्यवहार में तुलनात्मक अंतर की पहचान करना था। इसके लिए t-परीक्षण द्वारा प्राप्त विश्लेषण निम्नलिखित निष्कर्षों के रूप में सामने आए:

4.1 विद्यालय वातावरण-

तालिका 4.1: विद्यालय वातावरण के विभिन्न आयामों पर t-परीक्षण का परिणाम

आयाम	विद्यालय प्रकार	N	माध्य (M)	मानक विचलन (SD)	t-मूल्य	p-मूल्य
रचनात्मक उत्तेजना	सरकारी विद्यालय	400	60.38	7.42	2.85	< .01
	गैर-सरकारी विद्यालय	400	57.21	6.89		
संज्ञानात्मक प्रोत्साहन	सरकारी विद्यालय	400	30.92	6.33	-3.19	< .01
	गैर-सरकारी विद्यालय	400	33.43	6.11		

सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों ने अपने विद्यालय वातावरण को अधिक रचनात्मक, सहज एवं सहयोगात्मक रूप में अनुभव किया। वे शिक्षण प्रक्रिया में अधिक भागीदारी, नवाचार की स्वीकृति, एवं विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति जैसे अनुभवों को प्राथमिकता देते प्रतीत हुए। इससे यह संकेत मिलता है कि सरकारी विद्यालयों में भले ही संसाधनों की सीमाएँ हों, परंतु वहाँ का वातावरण विद्यार्थियों को सृजनात्मक सोच, सहयोगात्मक व्यवहार एवं आत्म-अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करता है। इसके विपरीत, गैर-सरकारी विद्यालयों के छात्रों ने विद्यालय वातावरण में अधिक संज्ञानात्मक प्रोत्साहन (Cognitive Encouragement) का अनुभव किया। अर्थात्, वहाँ उन्हें पाठ्य सामग्री की गहनता, शिक्षक की प्रश्न-प्रेरित पद्धति, वैचारिक चुनौती, एवं मूल्यांकन की स्पष्टता अधिक प्रभावी प्रतीत हुई। यह परिलक्षित करता है कि निजी विद्यालयों में शिक्षा की प्रक्रिया अधिक लक्ष्य-केन्द्रित, प्रतिस्पर्धी तथा अकादमिक रूप से अनुशासित होती है, जो छात्रों की बौद्धिक क्षमता को उत्तेजित करने में सहायक होती है। इस प्रकार, जहाँ सरकारी विद्यालय छात्रों को स्वतंत्रता एवं सृजनात्मकता का मंच प्रदान करते हैं, वहीं गैर-सरकारी विद्यालय उन्हें बौद्धिक अनुशासन एवं अधिगम की तीव्रता

की दिशा में प्रोत्साहित करते हैं। दोनों प्रकार के विद्यालय अपने-अपने तरीके से शैक्षणिक विकास में सहायक होते हैं, किंतु उनके प्रभाव के स्वरूप भिन्न होते हैं।

4.2 उपलब्धि अभिप्रेरणा-

तालिका 4.2: उपलब्धि अभिप्रेरणा स्कोर का तुलनात्मक विश्लेषण

विद्यालय प्रकार	N	माध्य (M)	मानक विचलन (SD)	t-मूल्य	p-मूल्य
सरकारी विद्यालय	400	112.74	14.53	-4.62	< .01
गैर-सरकारी विद्यालय	400	118.83	13.91		

गैर-सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों में शैक्षणिक सफलता प्राप्त करने की प्रेरणा अपेक्षाकृत अधिक तीव्र पाई गई। यह प्रेरणा उनके लक्ष्य केंद्रित व्यवहार, प्रतिस्पर्धात्मक दृष्टिकोण, तथा स्व-प्रेरित अधिगम प्रवृत्तियों में परिलक्षित होती है। निजी विद्यालयों का संरचित शैक्षणिक परिवेश, नियमित मूल्यांकन व्यवस्था, अपेक्षाकृत उच्च parental expectations, और उच्च गुणवत्ता की शिक्षण विधियाँ छात्रों में उपलब्धि की तीव्र इच्छा को बढ़ावा देती हैं। इसके अतिरिक्त, इन विद्यालयों में प्रतियोगी संस्कृति, प्रदर्शन उन्मुख मूल्यांकन और करियर केंद्रित परामर्श जैसी सुविधाएँ भी उपलब्धि अभिप्रेरणा को सुदृढ़ करती हैं। इसके विपरीत, सरकारी विद्यालयों के छात्रों में भी उपलब्धि की अभिलाषा विद्यमान होती है, किंतु संसाधनों की सीमाएँ, अपेक्षाकृत धीमी शैक्षणिक गति और बाह्य प्रेरणा की कमी के कारण वह उतनी तीव्रता से प्रकट नहीं हो पाती। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि गैर-सरकारी विद्यालयों का शैक्षणिक ढाँचा और वातावरण छात्रों की प्रदर्शन उन्मुख प्रेरणा को अधिक प्रभावशाली रूप से साकार करने में सहायक सिद्ध होता है।

4.3 समायोजन-

तालिका 4.3: समायोजन व्यवहार के आयामों में तुलनात्मक t-परीक्षण परिणाम

समायोजन आयाम	विद्यालय प्रकार	N	माध्य (M)	मानक विचलन (SD)	t-मूल्य	p-मूल्य
शैक्षिक समायोजन	सरकारी विद्यालय	400	39.85	6.72	-2.96	< .01
	गैर-सरकारी विद्यालय	400	42.12	6.38		
सामाजिक समायोजन	सरकारी विद्यालय	400	41.26	6.55	2.18	< .05
	गैर-सरकारी विद्यालय	400	39.47	7.03		
भावनात्मक समायोजन	सरकारी विद्यालय	400	38.33	6.81	-3.27	< .01
	गैर-सरकारी विद्यालय	400	40.61	6.12		

सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों में सामाजिक समायोजन (Social Adjustment) की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक पाई गई। यह संकेत करता है कि ऐसे विद्यालयों में विद्यार्थी अपने सहपाठियों, शिक्षकों तथा विद्यालय समुदाय के साथ अंतर-संबंधों को अधिक सहजता, सहयोग एवं सामूहिकता की भावना से निभाते हैं। इसका एक प्रमुख कारण यह हो सकता है कि सरकारी विद्यालयों में छात्रों की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अपेक्षाकृत समान होती है, जिससे आपसी समझ, सामंजस्य और अनौपचारिक संवाद की संभावनाएँ अधिक होती हैं। समूहों में कार्य करने की प्रवृत्ति, सामुदायिकता की भावना, और संसाधनों की सीमितता के बीच आपसी सहकार की आवश्यकता सामाजिक अनुकूलन को मजबूती प्रदान करती है। इसके विपरीत, गैर-सरकारी विद्यालयों के छात्र शैक्षिक (Academic) एवं भावनात्मक (Emotional) समायोजन में अधिक परिपक्व प्रतीत हुए। इन विद्यालयों में उपलब्ध बेहतर शैक्षणिक संसाधन, संरचित पाठ्यक्रम, नियोजित परामर्श प्रणाली, एवं व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रणाली के चलते छात्र शैक्षणिक चुनौतियों का अधिक कुशलतापूर्वक सामना करते हैं। साथ ही, भावनात्मक समर्थन, तनाव प्रबंधन प्रशिक्षण, और अनुशासित वातावरण उन्हें आत्मनियंत्रण, भावनात्मक संतुलन एवं आत्म-स्वीकृति की दिशा में सहायता प्रदान करता है। इस प्रकार, सरकारी विद्यालयों के छात्रों की सामाजिक अनुकूलन क्षमता, और गैर-सरकारी विद्यालयों के छात्रों की

शैक्षिक व भावनात्मक परिपक्वता — दोनों संस्थागत प्रकार अपने-अपने परिप्रेक्ष्य में छात्रों के विकास में विशिष्ट योगदान करते हैं। यह विभाजन नीति-निर्माताओं एवं शिक्षकों के लिए संकेतक हो सकता है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों की श्रेष्ठताओं को सम्मिलित कर संतुलित शैक्षिक वातावरण विकसित किया जा सके।

5 विवेचना-

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष यह स्पष्ट संकेत देते हैं कि विद्यालयों की संरचना, शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता, शिक्षकों की कार्यप्रणाली, और प्रशासनिक समर्थन प्रणाली विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक और शैक्षणिक विकास पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालते हैं। सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों के तुलनात्मक विश्लेषण से यह तथ्य उभरकर सामने आया कि दोनों संस्थागत व्यवस्थाओं की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं, जो विद्यार्थियों के अनुभवों को अलग-अलग दिशा में प्रभावित करती हैं।

सरकारी विद्यालयों में विद्यार्थियों ने रचनात्मकता, सहयोग, और संवाद की खुली संस्कृति को अधिक अनुभव किया। यह इस ओर संकेत करता है कि सीमित संसाधनों के बावजूद, सरकारी विद्यालयों में शिक्षक-छात्र संबंध अधिक मानवीय, लचीले और समावेशी होते हैं। यहाँ पर सामाजिक पृष्ठभूमि की समानता, समूह-गतिविधियों की प्रधानता और संवादात्मक शिक्षण शैली विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन और रचनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देती है।

इसके विपरीत, गैर-सरकारी विद्यालयों में विद्यार्थियों ने शैक्षणिक अनुशासन, प्रतिस्पर्धात्मकता, और प्रदर्शन-केन्द्रित शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रबल रूप में अनुभव किया। यह प्रवृत्ति विद्यार्थियों में उपलब्धि-अभिप्रेरणा, आत्म-नियंत्रण, एवं भावनात्मक संतुलन की ओर संकेत करती है। संसाधनों की अधिकता, शिक्षकों का संरचित प्रशिक्षण, तथा नियमित मूल्यांकन प्रणाली उन्हें शैक्षणिक लक्ष्यों के प्रति अधिक सजग और उत्तरदायी बनाती है।

यह भिन्नता दर्शाती है कि जहाँ एक ओर सरकारी विद्यालय विद्यार्थियों के सामाजिक और रचनात्मक पक्ष को पोषित करते हैं, वहीं गैर-सरकारी विद्यालय शैक्षणिक प्रतिस्पर्धा और भावनात्मक अनुशासन को बढ़ावा देते हैं। अतः यह आवश्यक प्रतीत होता है कि दोनों प्रकार की संस्थाओं की सकारात्मक विशेषताओं का समन्वय कर ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित की जाए, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित कर सके।

इस विवेचना से यह निष्कर्ष भी निकलता है कि विद्यालय वातावरण की प्रकृति, शिक्षक की संवेदनशीलता, एवं संस्थागत मूल्यधारा – ये सभी तत्व विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य, प्रेरणा तंत्र, और अनुकूलन क्षमता को गहराई से प्रभावित करते हैं। अतः शिक्षा-नीति निर्माताओं के लिए यह आवश्यक है कि वे केवल पाठ्यचर्या आधारित सुधारों पर नहीं, बल्कि विद्यालय के संपूर्ण परिवेश और उसकी अंतर्निहित कार्य-संस्कृति पर भी ध्यान केंद्रित करें।

6 शैक्षिक निहितार्थ-

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष यह इंगित करते हैं कि विद्यालयों की संरचना, वातावरण और कार्यप्रणाली विद्यार्थियों के शैक्षणिक तथा मनोवैज्ञानिक विकास पर गहरा प्रभाव डालती है। इस संदर्भ में निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ प्रस्तुत किए जा सकते हैं, जिन्हें नीति निर्धारण, शिक्षक-प्रशिक्षण एवं विद्यालय-प्रबंधन के स्तर पर अपनाना उपयोगी सिद्ध होगा:

- सरकारी विद्यालयों में संज्ञानात्मक प्रोत्साहन एवं उपलब्धि-उन्मुख रणनीतियों को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि सरकारी विद्यालयों में रचनात्मकता एवं संवादात्मकता की संस्कृति तो विद्यमान है, किन्तु शिक्षण में बौद्धिक चुनौती, लक्ष्य निर्धारण और उपलब्धि की भावना अपेक्षाकृत कम है। अतः पाठ्य-सामग्री की जटिलता को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करना, उत्तरदायित्व आधारित अधिगम को प्रोत्साहित करना, तथा परिणाम-आधारित मूल्यांकन प्रणाली को अपनाना आवश्यक है।
- गैर-सरकारी (निजी) विद्यालयों को सामाजिक समायोजन एवं रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने हेतु अधिक लचीलापन अपनाना चाहिए। अध्ययन में यह पाया गया कि इन विद्यालयों में अनुशासन और प्रतिस्पर्धा तो प्रबल है, परन्तु सामाजिक समावेशिता, सहयोगात्मक अधिगम और सह-अस्तित्व की भावना अपेक्षाकृत कमजोर है। अतः कक्षा-गतिविधियों, सामूहिक कार्यों, तथा संवाद-आधारित शिक्षण विधियों को अधिक प्राथमिकता दी जानी चाहिए, जिससे विद्यार्थियों में सामाजिक कौशल, सहिष्णुता एवं मानवीय दृष्टिकोण का विकास हो।
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शैक्षिक मनोविज्ञान को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए। समायोजन व्यवहार, उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा शैक्षिक वातावरण के प्रभाव को समझने हेतु शिक्षकों में मनोवैज्ञानिक संवेदनशीलता अत्यंत आवश्यक है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विद्यार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सामाजिक विविधता के साथ संवेदनशील संवाद और समावेशी शिक्षा की अवधारणाओं को पर्याप्त स्थान दिया जाना चाहिए। इससे शिक्षक न केवल विषयवस्तु में दक्ष होंगे, बल्कि वे विद्यार्थियों के सामाजिक और भावनात्मक संदर्भों को भी बेहतर ढंग से समझ सकेंगे।

इन निहितार्थों को क्रियान्वयन में लाकर, विद्यालय एक ऐसा सशक्त मंच बन सकता है जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास- शैक्षणिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक, का वास्तविक केंद्र बन सके।

7. निष्कर्ष-

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष यह स्पष्ट रूप से रेखांकित करते हैं कि विद्यालय का प्रकार- सरकारी या गैर-सरकारी, विद्यार्थियों के शैक्षणिक अनुभवों, उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा व्यवहारिक समायोजन को निर्णायक रूप से प्रभावित करता है। विद्यालय केवल एक शैक्षणिक संस्था नहीं, बल्कि एक मनो-सामाजिक पारिस्थितिकी तंत्र है, जो विद्यार्थियों की सोच, संवेदना और सामाजिक कार्यप्रणाली को आकार देता है।

अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि सरकारी विद्यालयों में जहाँ रचनात्मकता, संवाद की स्वतंत्रता और सामाजिक समायोजन की प्रवृत्ति अधिक प्रबल है, वहीं गैर-सरकारी विद्यालयों में अनुशासन, प्रतिस्पर्धात्मक उपलब्धि-अभिप्रेरणा एवं

भावनात्मक संतुलन की विशेषताएँ अधिक मुखर रूप में सामने आती हैं। दोनों प्रकार की विद्यालयीय व्यवस्थाएँ अपने-अपने संदर्भ में प्रभावी हैं, किंतु एकांगी दृष्टिकोण के कारण विद्यार्थियों के समग्र विकास की संभावनाएँ सीमित हो सकती हैं।

इसलिए यह अत्यावश्यक प्रतीत होता है कि सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालय प्रणालियों की सर्वोत्तम विशेषताओं का समन्वय कर एक एकीकृत शैक्षणिक मॉडल विकसित किया जाए, जो विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक विकास को समान रूप से पोषित कर सके। यह मॉडल केवल संसाधनों या अनुशासन पर आधारित न होकर, विद्यार्थी-केंद्रित, समावेशी और बहुआयामी शिक्षा को प्राथमिकता देने वाला होना चाहिए।

इस प्रकार, अध्ययन यह संकेत करता है कि शैक्षणिक संस्थानों की नीतिगत संरचना एवं कार्य-संस्कृति में संतुलन लाना आवश्यक है, ताकि शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में सफलता नहीं, बल्कि एक सजग, सशक्त और संवेदनशील नागरिक का निर्माण हो सके।

सन्दर्भ-

Bevans, R. (2020, January 31). *An Introduction to t Tests | Definitions, Formula and Examples*. Retrieved from SCribbr: https://www.scribbr.com/statistics/t-test/

NAIS. (2025). *Real-World Experiences Are Essential to Learning*. Retrieved from National Association of Independent Schools: https://www.nais.org/magazine/independent-school/summer-2018/real-world-learning/

NEP. (2020). *National Education Policy 2020.* Retrieved from Government of India: https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf#:~:text=Education%20is%20fundamental%20for%20achieving%20full%20human,and%20just%20society%2C%20and%20promoting%20national%20development.&text=The%20Policy%20envisages%20th

Ogundele, M. O. (2018). Behavioural and emotional disorders in childhood: A brief overview for paediatricians. *World Journal of Clinical Pediatrics, 7*(1), 9-26. doi:10.5409/wjcp.v7.i1.9

Vu, T., Magis-Weinberg, L., Jansen, B. R., Atteveldt, N. v., Janssen, T. W., Lee, N. C., . . . Meeter, M. (2022). Motivation-Achievement Cycles in Learning: a Literature Review and Research Agenda. *Educational Psychology Review, 34*, 39-71. doi:10.1007/s10648-021-09616-7